नेतृत्व

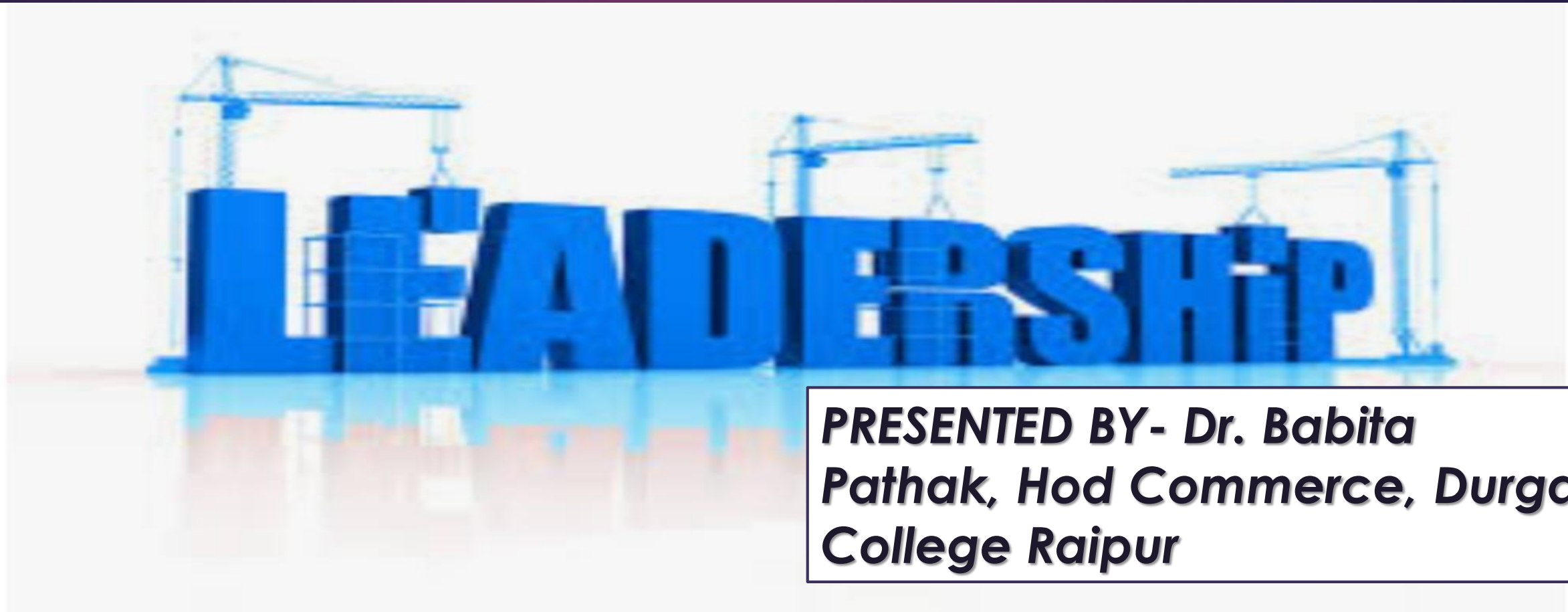

PRESENTED BY- Dr. Babita Pathak, Hod Commerce, Durga College Raipur

नेतृत्व की परिभाषा

“नेतृत्व अन्य लोगों में किसी सामान्य उद्देश्य को अनुसरण करने की इच्छा को जागृत करने की योग्यता को ही नेतृत्व कहते हैं”।

नेतृत्व के स्वरूप एवं शैलिया

अभिप्रेरणात्मक स्वरूप

- धनात्मक अभिप्रेरणा
- ऋणात्मक अभिप्रेरणा

शक्ति स्वरूप

- निरंकुश
- जनतांत्रिय
- स्वतंत्र

पर्यवेक्षकीय स्वरूप

- कर्मचारी अभिमुखी
- उत्पादन अभिमुखी

अभिप्रेरणात्मक स्वरूप

“अभिप्रेरणा स्वयं को अथवा किसी अन्य व्यक्ति को एक विशेष प्रकार का कार्य करने हेतु, प्रेरित करने की क्रिया है अथवा व वांछित कार्य कराने के लिए सही बटन दबाना है ,मनुष्य को तत्परता एवं रूचि के अनुसार कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करता है”|

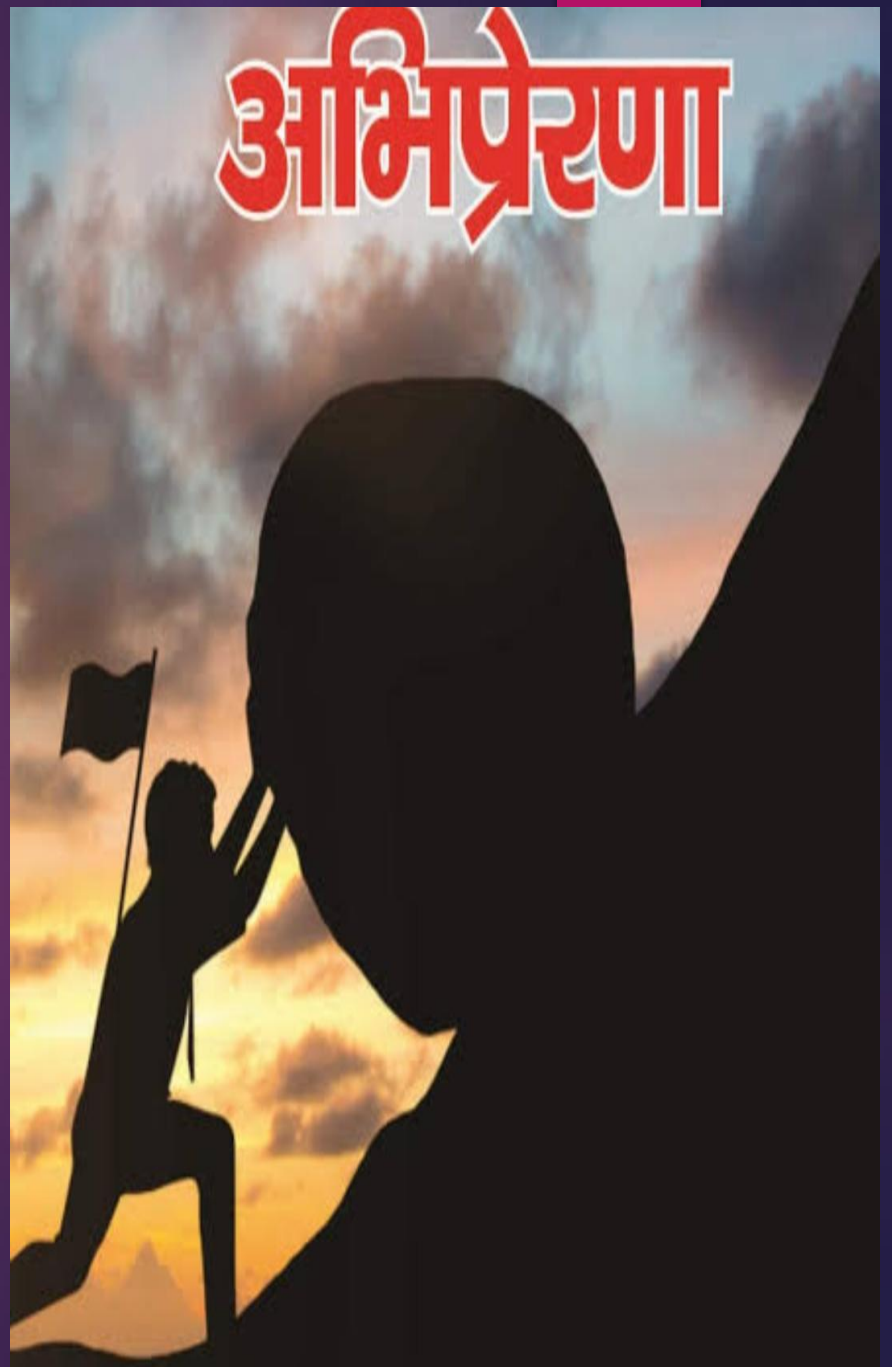

धनात्मक अभिप्रेरणा

- “धनात्मक अभिप्रेरणा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा संभावित लाभ या परितोषण अन्य प्रलोभन देकर दूसरों को अपनी इच्छा अनुसार कार्य लेने हेतु प्रेरित किया जाता है |उनमें मुद्रा सुरक्षा ,प्रशंसा, मान्यता परिणामों ,का ज्ञान ,प्रतिस्पर्धा तथा संतुष्टि प्रदान करना ,है परिणाम स्वरूप लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूर्ण लगन एवं सहयोग से कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं| इससे कर्मचारियों का मनोबल ऊंचा उठता है|”

ऋणात्मक अभिप्रेरणा

- नकारात्मक कार्यों की पूर्ति करने से है ऋणात्मक अभिप्रेरणा का उद्देश्य भी दूसरों को प्रभावित करके अपनी इच्छा अनुसार कार्य कराना है किंतु इसका मुख्य आधार भय द्वारा प्रभावित करना है,कर्मचारियों को भय डर दिखाकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है

निरंकुश स्वरूप

- नेतृत्व का निरंकुश स्वरूप जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट होता है ,ऐसा स्वरूप है जिसमें सभी अधिकार नेता के पास केंद्रित रहते हैं ,।उसे अपने अधिकार के प्रति असीम मोह रहता है, और इसी कारण वह अपने अधिकारों का विकेंद्रीकरण करना नहीं चाहता वह सभी निर्णय स्वयं लेता है ,एवं सभी कर्मचारी उनके अनुरूप कार्य करे वह असफलताओं के लिए तो अपने अधीनस्थों को दोषी ठहराता रहता है किंतु वह सफलता के लिए समस्त श्रेया अकेला ही रहना चाहता है।

जनतंत्र स्वरूप

- नेतृत्व का जनतंत्र स्वरूप निरंकुश स्वरूप के बिल्कुल विपरीत है जनतंत्र स्वरूप में नीतियों का निर्धारण भी स्वयं अकेला ना करके अपने अधीनस्थों अथवा अनुयायियों से विचार विमर्श करके करता है इस प्रकार के नेतृत्व के अंतर्गत नेता कभी-कभी तो अपने अधीनस्थों से प्राप्त सुझावों एवं विचारों में मामूली से परिवर्तन करके ही नीतियों एवं कार्य पद्धति योग का निर्धारण कर लेता है नेता को अपने अधिकारों के प्रति कोई लगाव नहीं होता है अधीनस्थ में सहकारिता की भावना का विकास होता है

स्वतंत्र स्वरूप

- स्वतंत्र स्वरूप के अंतर्गत नेता अपने अधीनस्थों अथवा अनुयायियों को स्वयं के भरोसे छोड़ देता है स्वयं ही लक्ष्य निर्धारित करते हैं और स्वयं ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक निर्णय लेते हैं नेता केवल आवश्यक अधिकार प्रदान करता है यह नेता अपने अनुयायियों की क्रियाओं का सकारात्मक अथवा नकारात्मक किसी भी रूप में मूल्यांकन नहीं करता है

पर्यवेक्षकीय स्वरूप

पर्यवेक्षकीय स्वरूप नेतृत्व का तीसरा प्रचलित स्वरूप पर्यवेक्षक के स्वरूप है,नेतृत्व के पर्यवेक्षक के स्वरूप में नेता किसी उद्देश्य विशेष को आमने सामने रखता है| और उस उद्देश्य विशेष को रखते हुए नेतृत्व करता है, इस प्रकार नेतृत्व में नेता या तो कर्मचारी को अधिक महत्त्व देता है ,अथवा उत्पादन को अधिक महत्व देता है

कर्मचारी अभिमुखी स्वरूप

- कर्मचारी अभिमुखी स्वरूप में नेता अधीनस्थों को अधिक महत्व दिया जाता है अर्थात उनकी सुविधाओं कार्य की दशाओं कार्य के वातावरण आदि में सुधार करने पर अधिक ध्यान देता है जिससे कर्मचारी कार्य के प्रति आकृष्ट धोकर प्रेरित हो सके| नेता सहयोगी वातावरण तैयार करने कर्मचारियों का विकास करने दृष्टिकोण से ज्यादा उपयुक्त माना जाता है

उत्पादन अभिमुख स्वरूप

उत्पादन अभिमुख स्वरूप में उत्पादन को महत्व दियाँ जाता है य इसके अंतर्गत यह विश्वास और धारणा लेकर नीति निर्धारण नकि उत्पादन की उन्नत विधियां अपनाने से व्यक्तियों को निरंतर कार्यरत कर रखने से और इन्हें कार्य करते रहने के निर्मित प्रेरित करने से उत्पादन उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है इस नेतृत्व का यह स्वरूप केवल उत्पादन अभिमुखी है

THANK YOU